International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume IV, Issue III, May-June 2017 Available online at: www.ijaur.com

बैगा जनजाति के आर्थिक जीवन का अध्ययन (संदर्भ–जिला शहडोल)

रोशनलाल सिंह
अतिथि विद्वान ;समाजशास्त्र
शासकीय महाविद्यालय देवेन्द्र नगर जिला पन्ना (म. प्र.)

शोध सारांश–
विश्व समाज दो समूहों में विभाजित है, पहला नगरीय समाज दूसरा ग्रामीण समाज। नगरीय समाज में सभ्य एवं आधुनिक कहे जाने वाले व्यक्ति निवास करते हैं, जबकि ग्रामीण समाज में सरल एवं असभ्य कहे जाने वाले लोग रहते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे कई दूरस्थ ग्रामीण अंचल है जहॉ के लोग सभ्यता से कोसों दूर हैं। आज भी उन लोगों तक सुविधाओं का अभाव है। ऐसी ही एक प्राचीन जनजाति है बैगा जो शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में फैले हुए हैं। सुविधाओं के अभाव के कारण आज भी ये जनजाति अपनी प्राचीन चिकित्सा पद्धति पर पूर्ण विश्वास एवं आस्था रखती है। किसी भी समाज एवं व्यक्ति का विकास उसके स्वास्थ्य पर निर्भर करता है जो समाज या व्यक्ति मानसिक, शारीरिक एवं दैहिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ्य होगा वही विकास के पथ पर आगे बढ़ पाता है, क्योंकि स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ्य मस्तिष्क निवास करता है। इस प्रकार स्वस्थ्य मस्तिष्क से सकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं, जिससे व्यक्ति सामाजिक, आर्थिक विकास कर पाता है।
बाह्य जगत के सम्पर्क से जनजातीय जीवन में जो समस्याएं उत्पन्न हुई हैं उनमें आर्थिक समस्या ही इनकी प्रमुख समस्या है। इनकी आर्थिक स्थिति देश के अन्य नागरिकों की अपेक्षा सामान्यतः अधिक खराब है। आर्थिक व्यवस्था मानव जीवन का आधार है। ऐसा कोई भी समाज नहीं है। जहॉ अर्थव्यवस्था के महत्व को स्वीकार न किया जाता हो। जनजातीय समाज में ऐसे भी परिवार हैं जो अपने सदस्यों को उचित मात्रा में भोजन भी उपलब्ध कराने में सफल नहीं होते, परिणामतः परिवार के सदस्यों को अपने विकास के पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते, उनमें आपसी लड़ाई होने लगती है। प्रस्तुत शोध बैगा जनजाति के आर्थिक जीवन के अध्ययन (संदर्भ–जिला शहडोल) का विश्लेषणात्मक शोध कार्य है।

मुख्य शब्द :- बैगा जनजाति, आर्थिक जीवन एवं शहडोल।

परिचयः
भारत में जनजातियों की स्थिति विशेष अच्छी नही है परन्तु अन्य राष्ट्रों की तुलना में भारतीय जनजातियों की स्थिति ठीक है। भारत के अनुसूचित जनजातियॉ सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं बौद्धिक दृष्टि से बहुत पिछड़े हुए हैं, कई प्रकार की प्रशासनिक व्यवस्थाओं का जन्म, विकास एवं पतन हुआ, लेकिन अभी भी इन जनजातियों की समस्याओं की ओर ध्यान नहीं दिया गया परिणाम स्वरूप वर्तमान में जनजातियों की समस्याऍ उग्र एवं भयावह हो गई हैं। बाह्य जगत के सम्पर्क से जनजातीय जीवन में जो समस्याएं उत्पन्न हुई हैं उनमें आर्थिक समस्या ही इनकी प्रमुख समस्या है। इनकी आर्थिक स्थिति देश के अन्य नागरिकों की अपेक्षा सामान्यतः अधिक खराब है। आर्थिक व्यवस्था मानव जीवन का आधार है। ऐसा कोई भी समाज नहीं है। जहॉ अर्थव्यवस्था के महत्व को स्वीकार न किया जाता हो।
जनजातीय समाज में ऐसे भी परिवार हैं जो अपने सदस्यों को उचित मात्रा में भोजन भी उपलब्ध कराने में सफल नहीं होते, परिणामतः परिवार के सदस्यों को अपने विकास के पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते, उनमें आपसी लड़ाई होने लगती है।
आदिवासी लोग आज के विज्ञान के युग में भी अधिकांशतः प्रकृति पर ही आश्रित है। हजारों वर्षो से उनकी सम्पति के मुख्य स्रोत जंगल, पहाड़, घाटियॉ एवं नदियॉ ही रही हैं। जंगलों तथा पहाड़ों से खाद्य–संग्रह करना, नदियों तथा तालाबों से मछली पकड़ना तथा कहीं–कहीं घाटियों व अन्यत्र पहाड़ी ढालों पर कृषि करना ही उनकी आजीविका के प्रमुख साधन रहे हैं।[32]
वील्स एवं हाइजर के अनुसार– ''आर्थिक संगठन व्यवहारों के प्रतिमान है तथा समाज का वह संगठन है जो कि वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन, वितरण तथा उपभोग से संबंधित है।''[33]
भारतीय जनजातियों का आर्थिक जीवन परम्परागत रहा हैं लेकिन औद्योगिक विकास के कारण एक चौथा वर्ग उभरा है। भारत के कुछ भागों में जनजातियॉ विभिन्न प्रकार के उद्योगों में लगी हुई हैं। बंगाल, बिहार एवं असम की जनजातियॉ चाय बागानों, खानों एवं कारखानों में काम करती हैं नई अर्थव्यवस्था के कारण इन लोगों ने पैसा तो अधिक कमाया है, किन्तु शराब, वेश्यावृत्ति जैसी बुराइयॉ भी अपनायी है। पहले जनजातियों की अर्थव्यवस्था में वस्तुविनिमय प्रचलित था अब वे मुद्रा अर्थव्यवस्था से परिचित हुए है। इसका लाभ व्यापारियों, मादक वस्तुओं के विक्रेता और सूदखोरों ने उठाया तथा सरल स्वभाव वाले जनजातियों को खूब ठगा। वे ऋणग्रस्त हो गये और अपनी कृषि भूमि को साहूकारों के हाथ बेंच दिया, या गिरवी रख दिया।
1991 में अनुसूचित जनजातियों को 50.93 प्रतिशत भाग को कृषक 36.67 प्रतिशत को कृषि श्रमिक तथा शेष को अन्य श्रेणियों में बॉटा गया।[34]
भारत में कुछ ऐसी जनजातियॉ है जो पूर्ण रूप से वनों तथा एकत्रित भोजन पर निर्भर रहती हैं। बिरहोर, चेंचू आदि जनजातियॉ इस श्रेणी में आती हैं। यह लोग मुख्यतः उन्हीं वस्तुओं पर निर्भर नहीं रहते जिन्हें ये एकत्र करते है। ये लोग

कृषकों से इन वस्तुओं का विनिमय कर लेते हैं या व्यावसायियों को बेंच देते हैं।[35]

जनजातीय अर्थव्यवस्था पर औद्योगीकरण का गहरा प्रभाव पड़ा है। पुरानी अर्थव्यवस्था ने अपनी मान्यता खो दी हैं। इसके स्थान पर उन लोगों ने नये कार्य जैसे– रिक्शा चालन, कारखाना मजदूरी, मशीन–चालन का कार्य अपना लिया। वनोपज लाकर जनजातियॉ नगरों में सस्ते दामों में बेंच देते हैं या खरीददारों द्वारा अन्य वस्तु देकर अमूल्य वनोपज ले लिया जाता है।

कुटीर उद्योगों द्वारा जीवन यापन करने वाली छोटी जनजातियों की जनसंख्या छितरी हुई हैं। पश्चिमी बंगाल तथा बिहार की महाली (डोची बनाने वाले) तथा मध्यप्रदेश की अगरिया (लोहार) जैसी जनजातियॉ इस श्रेणी में आती है।[36]

अध्ययन का उद्देश्य एवं महत्व –

प्रस्तुत शोध बैगा जनजाति आर्थिक जीवन का विश्लेषणात्मक शोध कार्य है जो निम्नांकित है –

1 बैगा जनजाति की आर्थिक जीवन का अवलोकन करना।
2 बैगा जनजाति के आर्थिक जीवन को प्रभावित करने वाले कारकों को ज्ञात करना।
3 बैगा जनजाति की आर्थिक दशा ज्ञात करना।
4 बैगा जनजाति के परम्परागत जीवन, सामाजिक दृष्टिकोण, रहन–सहन का स्तर, आर्थिक स्थिति इन सभी तथ्यों की नवीन जानकारी प्राप्त करना।
5 बैगा जनजातियों की आर्थिक जीवन सम्बन्धी समस्यायें, उनके विचार और दृष्टिकोण को पता करना।
6 बैगा जनजातियों के रूढ़िवादी, अंधविश्वास जनित स्वास्थ्य सम्बन्धी अवधारणाओं को ज्ञात करना।
7 अध्ययन से बैगा जनजातियों के आर्थिक जीवन सम्बन्धी समस्याओं के निदान के लिए बनाई जाने वाली नीति, निर्धारण हेतु नवीन तथ्यों को ज्ञात करना।

शोध प्रविधि एवं शोध क्षेत्र का परिचयः –

एक उत्तम शोध कार्य के लिए आवश्यक है उचित अध्ययन पद्धति का चुनाव करना। अध्ययन पद्धति वैज्ञानिक मानदण्ड के अनुसार हो जो तथ्यों को वैज्ञानिकता प्रदान कर सके। तथ्य जितने प्रमाणिक होंगे अनुसन्धान में उतनी ही वैज्ञानिकता होगी तभी अनुसन्धान के सत्य तक पहुंचा जा सकता है।

शोधार्थी ने शोध कार्य को गहन रूप प्रदान करने के लिए शहडोल जिले का विकासखण्ड सोहागपुर के बैगा जनजाति के आर्थिक जीवन का अध्ययन किया है।

1. शोध कार्य के लिए शहडोल जिले की सोहागपुर विकासखण्ड के बैगा जनजाति का चुनाव किया गया हैं।
2. अध्ययन के लिये 300 परिवारों का चुनाव किया जायेगा।
3. अध्ययन में 10 ग्रामों से 30–30 परिवारों का चयन किया गया है।
4. आंकड़ों एवं सूचनाओं के संकलन के लिये साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन पद्धति को अपनाया गया है।
5. निदर्शन पद्धति के द्वारा 300 बैगा परिवारों का चयन किया गया है, इन्हीं 300 परिवारों का प्राथमिक सर्वेक्षण कर लाटरी विधि द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है।

शहडोल जिला प्रायद्वीप भारत के उत्तरीय–पूर्वी भाग में विन्ध्य एवं सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित पर्वतीय एवं पठारी प्रदेश है। $23^0$30′ उत्तरी अक्षांश कर्क रेखा इस जिले को उत्तर एवं दक्षिण लगभग दो समान भागों में विभक्त है। 82^0 पूर्वी देशांतर रेखा जो भारत के मध्य से गुजरती है इस जिले के पूर्वी भाग से होकर जाती है। अतः शहडोल भारत के लगभग मध्य में स्थित है।

शहडोल जिला मध्यप्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र में $23^0$28′ नार्थ $81^0$35′ ईष्ट पर स्थित है। वर्तमान में शहडोल से अनुपपुर पृथक जिला बनाया गया है। जिसके क्षेत्रफल में कमी हुई है। अब शहडोल जिले का कुल क्षेत्रफल 5671 वर्ग किलोमीटर है। जिसमें अध्ययन क्षेत्र विकासखण्ड सोहागपुर का क्षेत्रफल 778 वर्ग किलोमीटर है। शहडोल जिले में पाँच विकासखण्ड– सोहागपुर, ब्योहारी, जयसिंह नगर, गोहपारू, बुढ़ार हैं जिनमें शोध के लिए सोहागपुर विकासखण्ड को चुना गया है।

शहडोल जिले की कुल जनसंख्या (2011 के अनुसार) 100565 है। जिसमें 51 प्रतिशत पुरूष एवं 49 प्रतिशत महिलाएं है। यहॉ का साक्षरता का प्रतिशत 80 प्रतिशत है, जिसमें 86 प्रतिशत पुरूष एवं 72 प्रतिशत महिलाएं साक्षर है। जनगणना 2011 के अनुसार शहडोल जिले में अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 700651 है जिसमें 351539 पुरूष एवं 349112 महिलाएं है, जो कि सम्पूर्ण आबादी का 44.48 प्रतिशत है। शहडोल जिले में जनजातियों का लिंगानुपात 993 है। अध्ययन क्षेत्र सोहागपुर में बैगाओं के 67 गॉव है जिनमें 86 टोले हैं। जिनकी कुल जनसंख्या 15690 है। जिनमें 8500 पुरूष एवं 7190 महिलाएं है।

सामाजिक संरचना

सामाजिक संरचना के अन्तर्गत जनजातीय स्थिति, परिवार एवं विवाह आर्थिक जीवन, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का विश्लेषण किया गया है। भारत के अनुसूचित जनजातियॉ सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं बौद्धिक दृष्टि से बहुत पिछड़े हुए हैं, कई प्रकार की प्रशासनिक व्यवस्थाओं का जन्म, विकास एवं पतन हुआ, लेकिन अभी भी इन जनजातियों की समस्याओं की ओर ध्यान नहीं दिया गया परिणाम स्वरूप वर्तमान में जनजातियों की समस्याऍ उग्र एवं भयावह हो गई हैं।

मध्यप्रदेश में 40 जनजातियॉ निवास करती है। भील सबसे अधिक जनसंख्या वाली जनजाति है जिनकी जनसंख्या 4618068 है जो जनजातीय जनसंख्या का 37.7 प्रतिशत है। गोंड मध्यप्रदेश की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है गोंडो की जनसंख्या 4357918 है जो कि सम्पूर्ण जनजाति का 35.6 प्रतिशत है। कोल, कोरकू, सहरिया और बैगा क्रमशः अधिक जनसंख्या वाली जनजातियॉ है।

स्थान	शिकार व खाद्य संचय अवस्था	स्थानांतरित कृषि पेड़ काटना, निर्माण इत्यादि	स्थायी कृषक (जो जानवरों को पालते हैं) मुर्गीपालन, कपड़ा बुनना, बर्तन निर्माण आदि।
1.	2.	3.	4.
उत्तर प्रदेश	श्राजी	कोरबा, सहरिया, मुइंया खारवार	थारू, मगहीं, बिंड, बोक्सा, खस, कोल
थ्बहार	खड़िया, बिरहोर	कोरवा, असुर	भुड़िया, हो, तमरिया, उरॉव
बंगाल	कुकी	गारो, साव, मड़िया	पोलियो संथाल
मध्यप्रदेश	हिममाड़िया	मूड़िया, दंडामी, भाड़िया गोंड	प्रजा
टसम	कुकी, कोनयक नागा	नागा, गारो	खासी, मनीपुरी
तमिलनाडू	कोमा, कोयरैड्डी	खोंड, कुरबां	बदागा, कोरा
आन्ध्रप्रदेश	पलियान, कादर हिल, पंचराम	गोंड, खोरा, मुंडवान	दूरूतला, परजा
उड़ीसा	ज्वांग	सोरा	––
महाराष्ट्र	––	––	भील, गोंड

बैगा जनजाति जनजाति के परिवार का स्वरूप क्रमशः 95 एवं 5 प्रतिशत है अर्थात् 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं का परिवार एकांकी है। तथा 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का परिवार संयुक्त पाया गया। एकाकी परिवार का मुख्य कारण आधुनिक जीवन शैली का उनके जीवन में प्रवेश है। विवाह के बाद पुत्र एक या दो वर्ष बाद माता–पिता से अलग हो जाते है। संयुक्त परिवार यहॉ के बैगा जनजातियों में विलुप्तता की अवस्था में है।

बैगा जनजाति में पैठुल विवाह 30 प्रतिशत होता है, मंगनी विवाह 20 प्रतिशत, लैमना विवाह 15 प्रतिशत, लमसेना एवं उधरिया विवाह क्रमशः 10–10 प्रतिशत तथा उठवा विवाह 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जानकारी दी। इस प्रकार प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि परम्परागत (मंगनी विवाह) सिर्फ 20 प्रतिशत बैगा परिवारों में होना पाया गया। ले भगा, ले भगी, उधरिया विवाह, एवं पैठुल विवाह का कुल प्रतिशत 60 प्रतिशत है। जो कि प्रेम विवाह का ही स्वरूप है जिसे आधुनिक समाज में स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

निष्कर्ष एंव सुझाव –

आर्थिक जीवन –

जनजातीय आर्थिक जीवन : –

डॉ. डी.एन. मजूमदार ने 'दि रेसेस एण्ड कल्चर्स ऑफ इण्डिया' में विभिन्न जनजातियों के आर्थिक स्तर का उल्लेख किया है जो निम्नानुसार है[37] –

जनजातियों का आर्थिक स्तर

उपरोक्त तालिका में प्रस्तुत विवरण में अब बदलाव आया है। औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के परिणामस्वरूप संचार तथा आवागमन के साधनों में तीव्र विकास होने के साथ–साथ जनजातियों का अन्य लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ने लगा है। इस सम्पर्क का प्रभाव जनजातियों की आर्थिक गतिविधियों तथा व्यवसायों पर पड़ा है। जनजातियों ने अपने परम्परागत उन व्यावसायों को जो आर्थिक रूप से ज्यादा फलदायी नहीं थे, वे स्थान पर नये व्यवसाय अपनाने लगी हैं। उन्होंने आज तक स्वयं ही पर्यावरण की शक्ति तथा भौतिक आवश्यकताओं के बीच एक संतुलन को कारगर बनाये रखने का भरसक प्रयास किया। परन्तु यह स्वाभाविक है कि अधिक समय तक इसे नहीं बनाया जा सकता तथा इसमें विकार उत्पन्न होना स्वाभाविक है। बढ़ती हुई आबादी, प्रकृति का ह्रास, भूमि की उपज में कमी, जंगलों का अभाव अथवा उनमें प्रशासनिक प्रतिबंध तथा सबसे महत्वपूर्ण बात है– बाहरी जगत का जनजातीय जीवन पर प्रभाव, जिससे वे सुदूर एकान्त स्थानों में रहते हुए भी अपने आपको नहीं बचा पायें। इन सब बातों ने जनजातीय आर्थिक जीवन में परिवर्तन ला दिये हैं। परन्तु ये प्रभाव अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग मात्रा में हुए हैं। कुछ स्थान आज भी ऐसे हैं जहॉ आदिवासी आदिम अर्थव्यवस्था के निकट है। अन्यत्र औद्योगिक परिवेश में प्रवेश पाये हुए, उच्च शिक्षा प्राप्त व अभिजातों की श्रेणी में रखे जाने वाले विशिष्ट व्यक्ति भी जनजाति के लोगों में पाये जाते हैं जो अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार लाने में सफलता प्राप्त कर सके हैं।

बैगा महिलाओं का आधुनिकीकरण के कारण शिक्षित होकर पति–पत्नी दोनों अपने परिवार व बच्चों को अच्छी शिक्षा, रहन–सहन, व्यवस्था आदि के लिए अपनी आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से शासकीय तथा अशासकीय नौकरी करके अपने परिवार की वह स्वयं की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये तत्पर रहती है। अध्ययन क्षेत्र की बैगा महिलाओं ने आर्थिक दृष्टि से परिवार को सफल बनाने के लिये घर से बाहर कार्य करके आर्थिक कमी को पूरा कर रही हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि

आधुनिकीकरण के कारण महिलाओं ने भी अपनी महत्वपूर्ण निभाई है। बैगा महिलायें अपने पति के समान ही कार्य करके आय के स्रोत को पूरा करके अपने पारिवारिक स्थिति को सुदृढ़ व मजबूत बना रही हैं।

मंडला जिले के बैगा चक क्षेत्र में अधिकांश आदिवासी ''गुनेरी घास'' के छोटे–छोटे छल्ले गुथकर चैन के समान सुन्दर मालाएँ महिलाओं के द्वारा बनाई जाती है। इसी तरह कान में पहनने के लिए तर्की का नाम का गहना बनाते हैं। यह भरू एवं कागज से बनाया जाता है और स्थायी रूप देने के लिए लाख से चिपका दिया जाता है। अपनी सूझ–बूझकर के अनुसार आदिवासी महिलायें इस गंहने को अधिक सुन्दर बनाने के लिए गहने के मध्य भाग में रंग–बिरंगे पत्थर का टुकड़ा चिपका देती हैं। आदिवासियों के द्वारा इन गहनों का उपयोग मेले, त्यौंहार, विशेष अवसरों पर किया जाता है। इसका व्यवसाय नहीं होता है।[38]

मजदूर वर्ग की जनजातियों के लोग अन्य कामों में भी मजदूरी के लिए प्रख्यात हैं जैसे कि पशुपालन, मत्स्योत्पादन और वानिकी में कोरकू, सहरिया और बैगा विशेष रूप से लगे हैं। खनिजों खनन में कोल और सहरिया, गृह उद्योगों में बैगा, बड़े उद्योगों में कोल, भवन, सड़क, बॉध आदि के निर्माण में बैगा और कोल जनजाति के लोगों का अनुपात अन्य जनजातियों की तुलना में अधिक है।[39]

प्रमुख जनजातियों के व्यवसायों की तुलना, 1981 (सक्रिय कार्यकर्ताओं का प्रतिशत)[40]

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हो रहा है कि बैगा जनजातियों में व्यावसायिक परिवर्तन हो रहे हैं बैगा प्रारम्भ में बेबर कृषि किया करते थे किन्तु वर्तमान में स्थायी कृषि करने लगे हैं यद्यपि आधुनिक साधनों का प्रयोग कम करते हैं। आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण उत्खनन, उद्योग धन्धे, निर्माण, व्यापार, परिवहन एवं अन्य सेवाओं की ओर इनका झुकाव तीव्र गति से बढ़ रहा है।

बैगा जनजातियों के व्यवसाय में परिवर्तन आया हैं जो निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत है –

क्रियाशील जनजातियों के व्यवसायों में 1961 तथा 1981 के मध्य अन्तर –

व्यवसाय	मुख्य कर्मियों का प्रतिशत			अन्तर
	1961	1981	1991	1961–1991
काश्तकार	73.0	60.8	63.2	– 9.8
खेतिहर मजदूर	20.5	31.4	29.5	+ 9.0
पशुचारण	2.3	2.2	0.8	– 0.7
उत्खनन	––	––	0.8	––
गृह उद्योग	1.1	0.9	0.6	– 0.5
निर्माण	0.3	0.6	0.7	+ 0.4
वाणिज्य एवं व्यापार	0.1	1.4	0.6	+ 0.5
परिवहन	0.1	0.4	0.4	+ 0.3
अन्य उद्योग	0.2	0.9	1.1	+ 0.9
अन्य सेवाएँ	2.5	1.5	2.3	– 0.2

उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि 1961–91 के मध्य जनजातियों के व्यावसायों में परिवर्तन आया है। कृषि व्यवसाय में काश्तकारों का अनुपात कम हुआ है। जबकि खेतिहर मजदूरों के अनुपात में वृद्धि कम हुई है। इसी प्रकार निर्माण, वाणिज्य एवं व्यापार, परिवहन एवं अन्य उद्योगों में वृद्धि हुई है।

मध्यप्रदेश में जनजातियों की कार्य सहभागिता दर (डब्ल्यू.पी. आर.) 50.5 प्रतिशत है, जो राष्ट्रीय स्तर (49.1) प्रतिशत से थोड़ा ही ज्यादा है। 1991–2001 के दशक में कार्यशील जनसंख्या में 1.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। पुरूष एवं महिला कार्य सहभागिता दर क्रमशः 53.2 प्रतिशत एवं 47.6 प्रतिशत है। मध्यप्रदेश जनजातीय आबादी का 67.8 प्रतिशत मुख्य वर्कर है जो राष्ट्रीय स्तर (68.9 प्रतिशत) के सभी जनजातियों से थोड़ा ही कम है। सभी बड़ी जनजातियों में भील, गोंड, कोरकू और बैगा का कार्य सहभागिता राष्ट्रीय औसत से ज्यादा है।

विवरण

Economic Category	All STs	Bhil	Gond	Kol	Korku	Sahariya	Baiga
Cultivators	46.8	60.7	46.8	12.0	38.8	28.2	32.6
Agriculture Labourers	42.1	31.4	42.5	70.4	54.5	56.9	54.7
HHI Workers	1.1	0.3	1.4	1.0	1.5	0.9	1.8
Other Workers							

Economical Category

Source: - Office of the Registrar general, India (Census-2001) P-3-5

उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि 32.6 प्रतिशत बैगा कृषक है 54.7 प्रतिशत कृषक मजदूर 1.8 प्रतिशत गृह निर्माण वर्कर एवं 10.9 प्रतिशत अन्य वर्कर। परम्परागत वेवर या ढहिया खेती करने वाला बैगा समाज आज परिवर्तन को ग्रहण किया और इस प्रकार उनकी व्यावसायिक संरचना में बदल रही है कृषि में आधुनिक साधनों का प्रयोग करने लगे हैं। अन्य व्यावसायों को अपनाने लगे हैं।

जनजातीय हस्तशिल्प के क्षेत्र में स्त्रियों की भूमिका पर्याप्त महत्वपूर्ण रही है। मणिपुर, त्रिपुरा, नागालैण्ड की जनजातियॉ एवं टोड़ा जनजाति में स्त्रियॉ रंग–बिरंगे वस्त्रों को निर्माण कर अपनी कलात्मक अभिरूचि का परिचय देती है। भोटन्तिक नारी अपने वाल्यकाल से ही कताई, बुनाई, दरी–कालीन आदि वस्त्र निर्माण की कला अपनी माता एवं अन्य वरिष्ठ स्त्रियों के संरक्षण में सीखती है। जनजातियों में हल चलाने का कार्य प्रायः पुरूष करते है लेकिन अन्य कार्य स्त्रियॉ ही करती हैं। इस प्रकार आर्थिक विकास की चाहे कोई भी अवस्था हो, जनजातीय स्त्रियॉ वर्तमान समय तक एवं ''लेबर मशीन'' की भॉति अपना योगदान अपने परिवार की अर्थव्यवस्था में देती आयी है।

हिमांचल प्रदेश में रहने वाली गुर्जर जनजाति की स्त्रियॉ पुरूषों की अपेक्षा अधिक कठोर श्रम करती हैं तथा परिवार के भरण–पोषण के लिये दोहरी भूमिका का निर्वाह करती है।[41]

राजस्थान की मडुलिया लोहर जनजाति की स्त्रियों कृषि उपकरणों का निर्माण करती है। डफला जनजाति की स्त्रियॉ अपने बच्चों के लिये जीवन–यापन के साधन स्वयं जुटाती हैं। आदिवासी क्षेत्रों में औद्योगिक विकास के फलस्वरूप पर्याप्त संख्या में आदिवासी स्त्रियॉ भी उद्योग तथा सम्बन्धित व्यवसायों को अपनाने लग गई हैं। परिणामस्वरूप श्रम बाजार में उनकी प्रास्थिति में परिवर्तन आया है।

'हो' जनजाति में पुरूष आमतौर पर आलस्य के लिये जाने जाते हैं इनके बारे में डी.एन. मजूमदार ने लिखा है कि पुरूष आमतौर पर कोई भी श्रमयुक्त कार्य तब तक नहीं करते हैं जब तक कि यह आवश्यक ही न हो तथा जब तक कि स्त्री की कमाई से उसे दो जून रोटी प्राप्त होती हैं। पुरूष कोई कार्य नहीं करते हैं। यहॉ तक कि पुरूष अपनी स्त्रियों को खदानों में मेहनत मजदूरी करने के लिये भेजते हैं तथा स्वयं अपने गॉवों में निष्काम पड़े रहते हैं।[42]

एन.सी. चौधरी का मत है कि जनजातीय समाजों में स्त्रियों को एक आर्थिक सम्पदा के रूप में माना जाता है तथा एक कठोर परिश्रमी एवं कर्तव्यपरायण पत्नी को पर्याप्त महत्ता एवं सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। स्त्री–पुरूषों के मध्य श्रम विभाजन स्पष्ट रूप से देखा जाता है स्त्री–पुरूषों के मध्य श्रम विभाजन स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। स्त्रियॉ घरेलू कार्य एवं बच्चों के लालन–पालन के अतिरिक्त कृषि सम्बन्धी कार्यो एवं पशु आहार एवं ईंधन संग्रह के कार्यो में अहम् भूमिका निभाती हैं। लेकिन इन सबके फलस्वरूप भी उन्हें पुरूषों के समकक्ष स्थान प्राप्त नहीं हैं। यद्यपि उन्हें बाजार आने जाने की पर्याप्त स्वतन्त्रता प्राप्त होती है।[43]

ज्योति सेन ने खासी जनजाति में स्त्रियों की आर्थिक भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा है कि –

अ) खासी जनजाति में स्त्रियॉ व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जबकि आमतौर पर अन्यत्र इस क्षेत्र में पुरूषों का वर्चस्व रहता है।

ब) अनेक स्त्रियॉ विविध प्रकार के क्रिया–कलापों में संलग्न होकर अपने परिवारों का अकेले ही भरण–पोषण करती हैं।

स) अनेक स्त्रियॉ जो व्यापार में संलग्न होती हैं, समय–समय पर एवं मौसम के अनुसार अपनी क्रय–विक्रय की वस्तुओं में परिवर्तन करती रहती हैं।[44]

जनजातीय क्षेत्रों में औद्योगिक विकास के फलस्वरूप पर्याप्त संख्या में आदिवासी स्त्रियॉ भी उद्योग तथा सम्बन्धित व्यवसायों को अपनाने लग गई हैं। परिणामस्वरूप श्रम–बाजार में उनकी प्रस्थिति में परिवर्तन आया है। उन्हें अब ऐसे व्यावसायों को करने का अवसर प्राप्त होने लगा है जिसमें उनके अपने श्रमपूर्ण कार्य के बदले नकद राशि प्राप्त होती है। आज के भौतिक युग में आदिवासी स्त्रियॉ मुद्रा अर्जित कर उसे अपने सुख एवं आराम का माध्यम बनाने की ओर अग्रसर होती प्रतीत होती हैं। पहले परम्परागत रूप से सामुदायिक आयोजन, उत्सव इसके माध्यम थे तो वर्तमान में होटल, सिनेमा, रेड़ियों, दूरदर्शन, इसके पूर्ति के साधन बनते जा रहे हैं। इस प्रकार ये लोग सामुदायिकता से व्यक्तिवादिता की ओर अग्रसर होती दिखाई पड़ते हैं।

विमल कुमार गुप्ता के अनुसार– मणिपुर की आदिवासी स्त्रियॉ व्यापार के क्षेत्र में ऐसी भूमिका निभाती है जिसका उदाहरण अन्यत्र मिलना कठिन है। उन्होंने इम्फाल के 'इम्या मार्केट' का उदाहरण प्रस्तुत किया है। जहॉ व्यापार के क्षेत्र में लगभग 99 प्रतिशत स्त्रियॉ व्यस्त दिखाई देती हैं। पुरूष तो कभी–कभार इक्के–दुक्के ही दृष्टिगोचर होते हैं। मेघालय में तो सामान सिर पर रखकर बेचने का कार्य भी प्रमुख रूप से स्त्रियॉ करती हैं। अरूणाचल की आदिवासी स्त्रियॉ मीलों दूर तक की यात्रा करती हुई पहाड़ी कठिन रास्तों से एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाती हैं तथा आवश्यक वस्तुओं के विनिमय में संलग्न दिखाई देती है।[45]

इस प्रकार अनेक जनजातीय समाजों में स्त्रियों ने पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करने की प्राचीन परम्परा को वर्तमान समय तक अस्तित्व में रखा है। आर्थिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं में उत्पादन व्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में उनका योगदान एवं भागीदारी सराहनीय प्रतीत होती है। यहॉ तक कि औद्योगीकरण के क्षेत्र में भी उन्होंने इस रफ्तार को बनाये रखने का प्रयास किया है। यद्यपि उद्योग के क्षेत्र में कार्यरत आदिवासी स्त्रियों में भूमिका का दबाव अधिक बढ़ गया है, तथा साथ ही साथ नये कार्य एवं कार्यक्षेत्र के साथ सामंजस्य की समस्या भी बढ़ गई है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि जनजातीय समाजों की अर्थव्यवस्था में स्त्रियों द्वारा निभायी जाने वाली भूमिका सर्वत्र ही महत्वपूर्ण रही हैं।

बैगा महिलाओं की अर्थव्यवस्था मुख्यतः शिकार, खेती, पशुपालन, मुर्गीपालन, घरेलू धन्धे, लकड़ी बेचना एवं जंगल में मजदूरी करना है। घर का काम तथा कृषि कार्य प्रायः महिलाऍ करती है। मैदानी भाग के बैगा अधिकतर मजदूरी करते हैं तथा वनों की कटाई एवं दुलाई में ये लोक सिद्धहस्त होते हैं। इस क्षेत्र में तेंदू के पेड़ अधिक है जो कि बीड़ी उद्योग में काम आते हैं महिलाऍ तेंदूपत्ता तोड़ने में दक्ष होती है इसके अलावा वनोपजों को लाकर ये लोग कस्बों के बाजारों में बहुत सस्ता बेच देते हैं। सुबह–सुबह आस–पास के कस्बों में बैगा लोग जलाने की लकड़िया लाकर बेचते हैं और अपनी जरूरत का सामान लेकर सुबह ही जंगल की ओर चले जाते हैं।

पूर्व में हल से खेती करना ये लोग पाप समझते थे, क्योंकि ये लोग अपने को धरती पुत्र कहते हैं। सन् 1847 के पहले तक बैगा लोग कुल्हाड़ी और कुंदाल से ही खेती करते थे। सन् 1857 के बाद अंग्रेजों ने कुल्हाड़ी की खेती पर पाबंदी लगा दी।

बैगा महिला एवं पुरूष अपने घरों में झाड़ू, बॉस की टोकनिया, डलिया, मछली के फंदे आदि बनाकर गॉव में ही बेंचते हैं। इसके अलावा महिलायें वनोपज कस्बों में ले जाकर बेंचती हैं। मेहलोन के पत्तों का संग्रह एवं बेचना महिलाओं का एक खास काम है। कुछ बैगा शहद और जड़ी–बूटिया इकट्ठी कर बेंचते हैं।

पुष्पराज गढ़ विकास खण्ड की महिलाओं में आधुनिकीकरण का प्रभाव ज्यादा दिखाई दे रहा है। पूर्व में महिलायें इतनी शिक्षित नहीं थी वे केवल घर के कार्य या वनोपज का कार्य करती थीं। लेकिन अब शिक्षित होकर शासकीय नौकरी एवं अशासकीय नौकरी करने लगी हैं। कार्य करने की सोच में बैगा महिलाओं में बदलाव आया है। अब वे बाहर का काम करके आर्थिक कमी को पूरा कर रही हैं। इस तरह आधुनिकीकरण के कारण बैगा महिलाओं ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सारणी क्रमांक–1.14 बैगा जनजाति का व्यवसाय

क्रमांक	व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
1.	नौकरी (शासकीय)	06	02 प्रतिशत
2.	नौकरी (अशासकीय)	12	04 प्रतिशत
3.	म्जदूरी	120	40 प्रतिशत
4.	व्यवसाय	90	30 प्रतिशत
5.	पशुपालन	30	10 प्रतिशत
6.	कृषि	42	14 प्रतिशत
	योग	**300**	**100 प्रतिशत**

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण, सोहागपुर, जिला–शहडोल

उपरोक्त ऑकड़ों से ज्ञात होता है कि बैगाओं का आर्थिक स्तर कैसा है? 02 प्रतिशत बैगा शासकीय नौकरी में हैं एवं 4 प्रतिशत अशासकीय नौकरी कर रहे है। 40 प्रतिशत मजदूरी का कार्य करते हैं तथा 30 प्रतिशत व्यवसाय में संलग्न है। 10 प्रतिशत पशुपालन का कार्य कर रहे हैं। 14 प्रतिशत कृषि कार्य में संलग्न है।

व्यवसायिक गतिशीलता : –

बैगा महिलाएँ पूर्व में सूपा, टोकनी, मोरा (मछली पकड़ने के लिए) बनाती थी पर अब दोना–पत्तल बनाने का भी कार्य करने लगी हैं। अब कृषि भी महिलाएँ करती हैं। व्यावसायिक गतिशीलता आधुनिकीकरण की देन हैं। इसके अलावा श्रमिक का कार्य भवन निर्माण में एवं ट्रेक्टर ट्राली, ट्रक आदि में करती है। अध्ययन क्षेत्र सोहागपुर, जिला–शहडोल के आस–पास खनिज पर्याप्त मात्रा में उत्खनन किया जा रहा है। इसलिए ये लोग अब खनिजों में श्रमिक का कार्य करने लगी हैं।

बैगा महिलाओं में व्यवसायिक गतिशीलता सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की गई जो इस प्रकार है –

सारणी क्रमांक–1.15व्यावसायिक गतिशीलता का विवरण

क्रमांक	व्यावसायिक गतिशीलता	संख्या	प्रतिशत
1.	पूर्व के कार्यो में कमी आई है	120	40 प्रतिशत
2.	पूर्व के कार्य करती हैं	180	60 प्रतिशत
	योग	300	100 प्रतिशत

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण, सोहागपुर, जिला–शहडोल

उपरोक्त ऑकड़ों से स्पष्ट होता है कि बैगा महिलाओं में व्यवसायिक गतिशीलता बढ़ रही है। 40 प्रतिशत उत्तरदाता महिलाओं ने स्वीकार किया कि उनके पूर्व के कार्यो में कमी आई है। पूर्व में ये महिलाएँ सूपा, टोकनी एवं मोरा बनाकर बाजारों में बेंचती थी। परन्तु अब ये महिलाएँ दोना–पत्तल बनाने का भी काम करने लगी हैं एवं कृषि कार्य भी करने लगी है। 60 प्रतिशत महिलाएं पूंछे गए प्रश्न का उत्तर दी कि हम लोग पूर्व के कार्य ही करती है।

सारणी क्रमांक–1.16 आय का विवरण

क्रमांक	आय का विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	500 से कम	90	30 प्रतिशत
2.	500–1000	150	50 प्रतिशत
3.	1000–2000	30	10 प्रतिशत
4.	2000–3000	24	08 प्रतिशत
5.	3000 से अधिक	06	02 प्रतिशत
	योग	300	100 प्रतिशत

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण, सोहागपुर, जिला–शहडोल

उपरोक्त तालिका से निष्कर्ष निकलता है कि 300 उत्तरदाता महिलाओं में 90 महिलाएँ 500 से कम आय मासिक प्राप्त कर पाती हैं। 500–1000 रूपये प्राप्त करने वाली 150 इसी प्रकार 1000–2000 तक आय प्राप्त करने वाली 30 एवं 2000 से 3000 रूपये कमाने वाली 24 महिलाएँ है। मात्र 6 महिलाएँ 3000 व इससे अधिक आय वर्ग में आती है। इस प्रकार प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि आज भी बैगा महिलाओं का आर्थिक जीवन निम्न स्तर का है।

बचत : –

बैगा महिलाओं की आय बहुत कम है। आय के कम होने तथा आवश्यकताओं के बढ़ जाने से महिलायें ज्यादा रकम की बचत नहीं कर पाती हैं। जो बचत करती हैं वो बहुत कम है। अपनी मासिक आमदनी से न्यूनतम आवश्यकतायें पूरी नहीं कर पाती यद्यपि बचत के प्रति जागरूक हैं और बचत करना चाहती हैं।

सारणी क्रमांक–1.17 बैगा महिलाओं में बचत सम्बन्धी जानकारी

क्रमांक	बचत का विवरण	संख्या	पतिशत
1.	बचत करती हैं	90	30 प्रतिशत
2.	बचत नहीं करती हैं	150	50 प्रतिशत
3.	बचत करना चाहती हैं	60	20 प्रतिशत
	योग	300	100 प्रतिशत

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण, सोहागपुर, जिला–शहडोल

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि वर्तमान में 30 प्रतिशत महिलाएँ बचत करती हैं जबकि 50 प्रतिशत महिलाएँ बचत नहीं करती हैं। 60 अर्थात् 20 प्रतिशत महिलाएँ ऐसी हैं जो बचत तो करना चाहती हैं, परन्तु पैसों के अभाव के कारण बचत नहीं कर पाती हैं।

बैगा समाज में ऋणग्रस्तता : –

जनजातीय समाज में ऋणग्रस्तता विकराल समस्या है। भारत की जनजातीय समाज निर्धन एवं गरीब हैं जो अपनी न्यूनतम

आवश्यकताओं के पूर्ति तथा सामाजिक एवं धार्मिक आयोजनों के लिये कर्ज लेते हैं। ऋण लेने सम्बन्धी जानकारी ली गई जो निम्नानुसार है –

सारणी क्रमांक–1.18 ऋणग्रस्तता सम्बन्धी विवरण

क्रमांक	ऋणगस्तता	संख्या	प्रतिशत
1.	ऋण ग्रस्त है	240	80 प्रतिशत
2.	ऋण ग्रस्त नहीं हैं	60	20 प्रतिशत
	योग	300	100 प्रतिशत

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण, सोहागपुर, जिला–शहडोल

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 80 प्रतिशत बैगा ऋणग्रस्त है। 20 प्रतिशत बैगा ऋणग्रस्त नहीं है। ऋणग्रस्त बैगा जन्म संस्कार, विवाह एवं आधुनिक आवश्यक वस्तुओं के लिये, चिकित्सा, धार्मिक उत्सव आदि के लिये ऋण लेती हैं। वर्तमान में ऋण लेने सम्बन्धी विचारों में कमी आई हैं।

सारणी क्रमांक–1.19 ऋण लेने के स्रोत

क्रमांक	ऋण लेना (स्रोत)	संख्या	प्रतिशत
1.	शासकीय	15	05 प्रतिशत
2.	साहूकार/महाजन	180	60 प्रतिशत
3.	अन्य व्यक्तियों से	45	15 प्रतिशत
4.	ऋण नहीं लेते	60	20 प्रतिशत
	योग	300	100 प्रतिशत

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण, सोहागपुर, जिला–शहडोल

उपरोक्त सारणी से पता चलता है कि बैगा 5 प्रतिशत ऋण बैंक से या किसी शासकीय एजेन्सी से, 60 प्रतिशत साहूकार/महाजन से तथा 15 प्रतिशत अन्य व्यक्तियों से ऋण लेते हैं। बैंक से ज्यादा लोग ऋण नहीं ले पाते क्योंकि बैंक की औपचारिकताएँ इतनी जटिल होती है कि वे पूरा नहीं कर पाते। साहूकार/महाजन या अन्य ऋण दाता व्यक्तियों की ब्याज दर बहुत अधिक है, लेकिन जटिलताएँ नहीं हैं। इसलिए इनसे ऋण लेने में बैगाओं को ऋण लेने में सुविधा होती है।

सारणी क्रमांक–1.20 बैगा जनजाति में ऋण ग्रस्तता का कारण

क्रमांक	ऋण के कारण	संख्या	प्रतिशत
1.	संस्कारों का सम्पादन	90	30 प्रतिशत
2.	धार्मिक आयोजन	60	20 प्रतिशत
3.	चिकित्सा	30	10 प्रतिशत
4.	अनाज खरीदी	60	20 प्रतिशत
5.	आधुनिक वस्तुओं की खरीदी	45	15 प्रतिशत
6.	अन्य	15	05 प्रतिशत
	योग	300	100 प्रतिशत

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण, सोहागपुर, जिला–शहडोल

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि वर्तमान ऋण ग्रस्त बैगाओं में 30 प्रतिशत बैगा संस्कारों के सम्पादन के लिये, 20 प्रतिशत धार्मिक आयोजन, 10 प्रतिशत चिकित्सा, 20 प्रतिशत अनाज खरीदी, 15 प्रतिशत आधुनिक वस्तुओं की खरीदी, 05 प्रतिशत अन्य सामान की खरीदी के लिये ऋण लिया जाता है।

बैगा में व्यय की स्थिति : –

बैगा जनजाति की प्रति व्यक्ति पारिवारिक आय कम है जो आमदनी होती है बैगा उसे भोजन, वस्त्र व आवास एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं पर व्यय करती है। कभी–कभी पारिवारिक सदस्यों के बीमार पड़ जाने पर भी रूपयों को खर्च किया जाता है। धार्मिक व सामाजिक उत्सवों एवं त्यौंहारों का आयोजन होने पर भी बचत की राशि को व्यय किया जाता है।

बैगा जनजाति से व्यय सम्बन्धी जानकारी ली गई जिसमें निम्न तथ्य प्रकाश में आयें, जो निम्नानुसार है –

सारणी क्रमांक–1.21 व्यय की जाने वाली राशि का विवरण

क्रमांक	व्यय की जाने वाली राशि	संख्या	प्रतिशत
1.	वस्त्र	45	15 प्रतिशत
2.	भोजन	30	10 प्रतिशत
3.	चिकित्सा	30	10 प्रतिशत
4.	मकान	30	10 प्रतिशत
5.	शिक्षा	15	05 प्रतिशत
6.	मनोरंजन	45	15 प्रतिशत
7.	धार्मिक व सामाजिक आयोजन	90	30 प्रतिशत
8.	अन्य	15	05 प्रतिशत
	योग	300	100 प्रतिशत

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण, सोहागपुर, जिला–शहडोल

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि वर्तमान में बैगाओं द्वारा 15 प्रतिशत वस्त्र में, 10 प्रतिशत भोजन में, 10 प्रतिशत चिकित्सा में, 10 प्रतिशत मकान में, 05 प्रतिशत शिक्षा में, 15 प्रतिशत मनोरंजन में, 30 प्रतिशत धार्मिक व सामाजिक आयोजन में, 05 प्रतिशत अन्य मदों में व्यय करते हैं। जबकि पूर्व में बैगाओं में मकान, शिक्षा, मनोरंजन, चिकित्सा आदि में व्यय न्यून मात्रा में था वर्तमान पीढ़ी के बैगाओं में चिकित्सा, मनोरंजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा के प्रतिशत व्यय में वृद्धि हुई है।

सन्दर्भ सूची

1. उप्रेती, हरिश्चन्द्र : भारतीय जनजातीय संरचना एवं विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2002, पृष्ठ संख्या–2.2
2. उप्रेती, हरिश्चन्द्र : भारतीय जनजातीय संरचना एवं विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2002, पृष्ठ संख्या–212
3. नदीम हसनैन : जनजातीय भारत : जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ संख्या–452

4. नदीम हसनैन : जनजातीय भारत : जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ संख्या–452
5. नदीम हसनैन : जनजातीय भारत : जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ संख्या–452
6. मजूमदार, डी.एन. : रेसेज एण्ड कल्चर्स ऑफ इण्डिया, 1921, पृष्ठ संख्या–368
7. तिवारी, शिवकुमार : मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2005, पृष्ठ संख्या–239
8. तिवारी, शिवकुमार एवं कमल शर्मा : मध्य प्रदेश की जनजातियॉ समाज एवं व्यवस्था, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2009, पृष्ठ संख्या 232, 233
9. तिवारी, शिवकुमार एवं कमल शर्मा : मध्य प्रदेश की जनजातियॉ समाज एवं व्यवस्था, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2009, पृष्ठ संख्या–233
10. एस.एस. शशि : द ट्राइबल वीमन ऑफ इण्डिया, दिल्ली, 1978, पृष्ठ संख्या–13
11. शुक्ला, ब्रम्हकुमार : द डफलाज ऑफ नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेन्सी शीलांग, 1959, पृष्ठ संख्या–89
12. चौधरी, एन.सी. : ''वीमन हुड इन ट्राइबल इंण्डिया'' ट्राइबल वीमन इन इण्डिया, 1978, पृष्ठ संख्या–19
13. के.एस. सिंह (सम्पादक) : इकोनामिक ऑफ द ट्राइब्स एण्ड देयर ट्रांसफोर्मेन कान्सेप्ट प्रकाशन, नई दिल्ली, 1982, पृष्ठ संख्या–102
14. उप्रेती, हरिश्चन्द्र : उद्धत, भारतीय जनजातियॉ : संरचना एवं विकास राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2002, पृष्ठ संख्या–299